Indian J. Soc. & Pol. 05(I):2018:81-82 Special Issue **ISSN : 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

भारत–आसियान सम्बंध

ममता मणि त्रिपाठी[1a]

[a]एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र, श्री भगवान महावीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय,फाजिलनगर (कुशीनगर),उ0प्र0,भारत

ABSTRACT

दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र म्यांमार, थाईलैण्ड, मलेशिया, इंडोनेशिया, लाओस एवं कंबोडिया आदि ऐतिहासिक रुप से भारतीय विचारो, धर्म, कला तथा संस्कृति से प्रभावित रहे हैं। इन राष्ट्रों के साथ भारत की सांस्कृतिक समानता इनके साथ भारत के घनिष्ठ आर्थिक सहयोग एवं प्रगाढ़ सम्बंधों के लिए व्यापक आधार प्रदान करती है। वर्ष 1991 में घोषित भारत की पूर्व की ओर देखो नीति (Look east policy) तथा वर्ष 1997 में आसियान द्वारा बाहरी रिश्तों के सम्बंध में घोषित आसियान दृष्टिकोण, 2020 (Asean Vision 2020) की नीति में भारत आसियान रिश्तों को मजबूत करने हेतु नया आयाम प्रदान किया। भारत को वर्ष 1992 में इसे पूर्ण वार्ता साझेदार (Look east Full Dialogue Partner) का दर्जा दिया गया। वर्ष 1996 में भारत को अनुबंगी संगठन ASEAN Reginal Forum की सदस्यता दी गयी।भारत एवं आसियान के देशों के सम्बंध 3C पर आधारित हैं ये 3C हैं– वाणिज्य Commerce, संस्कृति Culture व संपर्क Conectivity प्रस्तुत शोध में भारत आसियान सम्बंधों के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

KEYWORDS: *क्षेत्रीय सहयोग, भारत, आसियान*

दक्षिणी पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संघ Association of South east Asia nations- ASEAN की स्थापना पाँच संस्थापक सदस्यों इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलिपींस, सिंगापुर और थाईलैण्ड द्वारा आसियान घोषणा (बैंकाक घोषणा) पर 8 अगस्त 1967 को हस्ताक्षर किये जाने के पश्चात हुआ। यह हस्ताक्षर थाईलैण्ड में किया गया था। बाद में 7 जनवरी 1994 को ब्रुनई 1995 को वियतनाम, 23 जुलाई 1997 को लाओस एवं म्यांमार और 30 अप्रैल 1999 को कंबोडिया आसियान का सदस्य बना। आसियान की स्थापना दक्षिण पूर्व एशिया में आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को तेज करने के लिए किया गया था। इसका घोषित उद्देश्य क्षेत्रीय शांति और स्थायित्व सुनिश्चित करना है। आसियान चार्टर जकार्ता में आसियान सचिवालय में 15 दिसम्बर 2008 को सदस्य देशों की एक बैठक के बाद प्रभाव में आया। चार्टर में आसियान का उद्देश्य देशों की संप्रभुता, क्षेत्रीय अखण्डता तथा स्वतंत्रता को बनाए रखना तथा झगड़ों तथा आपसी विवादों का शांतिपूर्वक निपटारा करना था। आसियान चार्टर के महत्व को इस प्रकार देखा जा सकता है–

- शीर्ष स्तर पर नई राजनीतिक प्रतिबद्धताएँ
- नए आसियान संस्थाएँ
- नई और बढ़ी हुई प्रतिबद्धताएँ
- नया विधिक ढाँचा और व्यक्तित्व
- आसियान के महासचिव के कई नए एवं भुमिका को बढ़ाना

भारत आसियान सम्बंध की वास्तविक शुरुआत 1991 में आसियान द्वारा भारत को क्षेत्रक वार्ता भागीदार का दर्जा प्रदान किये जाने से हुआ। क्षेत्रक वार्ता भागीदार का अर्थ है– भारत को कुछ सीमित क्षेत्र में सहयोग का अवसर दिया जाए। उस समय यह सहयोग सांस्कृतिक पर्यटन जैसे क्षेत्रों तक सीमित था। 1994 में इसमें विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी को जोड़ दिया गया। वर्ष 2002 में कम्बोडिया के नामपेन्द्र में आसियान भारत सम्मेलन हुआ जिसके बाद आसियान भारत सम्बंध एक नई उच्चता की ओर बढ़ा। तबसे भारत आसियान संबंध शिखर वार्ता वार्षिक आधार पर होने लगा। 12 नवम्बर 2014 को नई पाटा म्यांमार में आयोजित किये गए 12वें आसियान भारत शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और आसियान नेताओं ने भारत आसियान रणनीतिक भागीदारी की वर्तमान स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने आसियान को भारत की पूरब के कार्य नीति का मुख्य बिन्दु बना दिया गया तथा सभी क्षेत्रों में संबंधों को सुदृढ़ करने का आह्वान किया।

भारत ने दक्षिण पूर्व एशिया में शांति सुरक्षा स्थिरता और विकास के प्रति अपनी वचनबद्धता तथा भागीदारी को सुनिश्चित करते हुए 8 अक्टूबर 2003 को इंडोनेशिया के बाली द्वीप में होने वाले द्वितीय आसियान भारत शिखर सम्मेलन के दौरान दक्षिण पूर्व एशिया में मित्रता तथा सहयोग की संधि को स्वीकार किया। इसी सम्मेलन में आसियान और भारत ने अंतर्राट्रीय आतंकवाद के खिलाफ सहयोग के लिए एक संयुक्त घोषणा पत्र पर भी हस्ताक्षर किया। अब्टेबर 2010 में हनोई के आठवें आसियान भारत शिखर सम्मेलन में 2010–2015 तक के लिए एक नई कार्य योजना स्वीकारा गया।

मूल रुप से दक्षिण पूर्वी एशिया के साथ आर्थिक एवं कूटनीतिक संलग्नता को लेकर भारत की इच्छा का संकेत बीतते समय के साथ स्पष्ट रुप से सामने आने लगी है। नवम्बर 2014 में म्यांमार के नव प्यीतव में आयोजित 12वें आसियान शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी नें यह घोषणा करते हुए दक्षिण पूर्वी तथा पूर्वी एशिया के साथ भारत की ठोस सम्बद्धता को लेकर अपनी प्रतिबद्धता दोहरायी कि भारत की (Look east policy) अब (Act

1: Corresponding Author

east policy) हो गयी है। दक्षिणी पूर्वी एशिया के साथ भारत का व्यापार 2000–01 से 2013–14 तक 7.1 अमेरिकी डॉलर से 74.4 अमरिकी डॉलर यानि दस गुना बढ़ गया। वर्ष 2008 में भारत आसियान के बीच द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा देने के लिए पेश किया गया था। 2008–09 में भारत आसियान के बीच द्विपक्षीय व्यापार 45 अरब डालर था जिसमें 2010 तक वृद्धि होने की संभावना है। समकालीन समय में आसियान भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। वर्ष 2014–15 में दोनों देशों के बीच 76.52 विलियन डालर का व्यापार था। जुलाई 2015 में भारत आसियान मुक्त व्यापार क्षेत्र के निर्माण के साथ आर्थिक सहयोग में उछाल आया जिसनें बाद में भारत आसियान सेवा और निवेश में व्यापार समझौते का रास्ता साफ किया। भारत अपने आर्थिक हित को आसियान में विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पर्यटन, बैंकिंग आदि के रुप में सर्विस संण्टर का विस्तार करना चाहता था क्योंकि इन चीजों के मामले में भारत आसियान देशों से आगे है। अतः सेवा क्षेत्र में विस्तार से व्यापार असंतुलन को कम करने में भारत को मदद मिलेगी। यह भी महत्वपूर्ण है कि दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ भारत का आर्थिक एकीकरण महत्वपूर्ण ढंग से न केवल विस्तार ले रहा है बल्कि विविधीकरण का स्वरुप भी प्राप्त कर रहा है। वर्ष 1992 में जब तत्कालीन प्रधानमंत्री पी0बी0 नरसिंहा राव ने पूर्व की ओर देखो के माध्यम से भारत के राजनयिक इतिहास में एक दृढ़ एवं नए मोड़ का संकेत दिया, तो एक तरह से उन्होंने पुरानी परम्परा का पुनरुद्धार ही किया जिसकी जड़े प्राचीन भारत में विद्यमान थी। लगभग 15वीं शदी तक भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं व्यापारिक संपर्क विद्यमान थे। भारत की गाथा संभवतः यहीं से आरंभ हुई। 1967 में जब आसियान की स्थापना हुई तो इसे नव उपनिवेशवाद के एक उपकरण के रुप में देखा गया। भारत नें निरंतर इस तथ्य की उपेक्षा की कि आसियान देश एक भिन्न तरीके से अपनी स्वतंत्रता की सुरक्षा कर रहे थे साथ ही महाशक्तियों अमेरिका तथा रुस से दूरी बनाए हुए थे।

भारत की आर्थिक उत्थान के खोज के फलस्वरुप अस्तित्व में आयी (Look east policy) आज (Act east policy) का रुप धारण कर पूरे एशिया प्रशान्त क्षेत्र को आच्छादित करने हेतु तत्पर है। वृहत्तर एशिया प्रशान्त क्षेत्र में आसियान का आर्थिक राजनीतिक एवं सामरिक महत्व तथा व्यापार और निवेश में भागीदार बनने की क्षमता, भारत की नीति का एक महत्वपूर्ण कारक है। Commerce, Culture and Connectivity आसियान के साथ भारत की मजबूत साझेदारी के तीन स्तम्भ हैं। भारत मुख्यतया दो बिन्दुओं पर आसियान के साथ साझेदारी की चाह रखता है, वह है–व्यापार तथा समुद्री सुरक्षा। भारत आसियान के बीच मुफ्त व्यापार संधि 2009 में हुई। भारत को 1.3 विलियन लोगों का खुला बाजार मिला। जिसका जी0डी0पी0 2.5 ट्रिलियन थी। इस संधि के बाद भारत के सामने राजनीतिक रक्षा, सुरक्षा एवं सांस्कृतिक गठजोड़ के रास्ते खुल गये।

15वें आसियान भारत शिखर सम्मेलन 2017 में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नें 14 नवम्बर 2017 को आयोजित सम्मेलन में भाग लिया। भारत और आसियान के बीच 30 वार्ता तंत्र है जो विदेश मामलों, वाणिज्य, पर्यटन, कृषि, पर्यावरण, अक्षय उर्जा और दूरसंचार पर नियमित रुप से बैठक करते हैं। भारत और आसियान के बीच वर्ष 2016–17 में 71 विलियन अमेरिकी डालर का व्यापार हुआ जो कि पूरे विश्व के साथ भारत के कुल व्यापार का 10.85 प्रतिशत है। आसियान वर्तमान में भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। आसियान भारत वार्ता भागीदारी की 25वीं वर्षगाँठ को मनाने के लिए निर्धारित किये गये उपयुक्त विषय– साझे मूल्य, समान भाग्य (Shared values, Commen destiny) के साथ अनेक स्मरणीय क्रिया कलापों का आयोजन किया जा रहा है। भारतीय प्रधानमंत्री ने 25 जनवरी 2018 को नई दिल्ली में आयोजित किये जाने वाले भारत आसियान विशेष स्मारक शिखर सम्मेलन में सभी आसियान देशों को आमंत्रित किया।

इस प्रकार आसियान भारत की विदेश नीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानें के अलावा वैश्विक एवं क्षेत्रीय रुप से इसके सामरिक व्यवहार में भी अहम भूमिका निभाता है। आर्थिक हित सामरिक हितों के जाल में प्रमुख स्थान ग्रहण कर लिया है हालांकि भारत को अपने साफ्ट पावर स्किल की रक्षा एवं सुरक्षा करना जरुरी है। समकालीन विश्व में भारत को अभी भी Soft Power के रुप में कार्य करना होगा क्योंकि इन्होंने अपने संस्थापक पीढ़ी के नेताओं गाँधी, नेहरु, अरविन्दों और विवेकानन्द, टैगोर के Soft Power आकाँक्षाओं को छोड़ दिया। भारत आसियान संबंधों का भू राजनीतिक एवं सामरिक महत्व है। दक्षिणी चीन सागर में नौ संचालन की स्वतंत्रता बनाए रखने, नशीले पदार्थों की तस्करी, आतंकवाद, साइबर अपराध आदि की रोकथाम तथा चीन की आक्रामक नीति को संतुलित करने के लिए भारत के लिए आसियान महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

सिंह रहीस 'अंतर्राष्ट्रीय संबंध' Lexis Nexis पृ0–179

सिविल सर्विसेज क्रानिकल नवम्बर 2015

Indian-Asian relations (http:/www.mea.gov.in/portal/foreign relation/ India-Asian Relation.pdf)

समसामयिक घटना चक्र – जनवरी 2018

वर्ड फोकस जुलाई 2016

वर्ड फोकस जनवरी 2016

वर्ड फोकस जून 2016

Ye bhanshu shekhar (2013) Indian ASEAN relation enter a new discourse' available at http://www.icwa.in/pats/vplndiaasean.pdf